Date 21/07/20 Page-1

BA-I
Paper-I
Unit-5

Dr Raj Gopal
Assistant Professor (C/P.T)
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U)
Mail ID:- rajgopal7755@gmail.com

Topic :⇒ Charvaka : Ontology
(चार्वाक : तत्वमीमांसा)

चार्वाक का तत्व विज्ञान इसके प्रमाण विज्ञान पर आश्रित है। चार्वाक केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है। इस आधार पर चार्वाक दार्शनिक केवल उन्हीं तत्वों की सत्ता को स्वीकार करता है जिनका प्रत्यक्ष होता है। जिन तत्वों का किसी भी प्रकार से प्रत्यक्ष नहीं होता है, वे उनकी सत्ता को अस्वीकार करते हैं। इस आधार पर चार्वाक दर्शन जड़ तत्व या भौतिक पदार्थ की ही सत्ता को स्वीकार करते हैं। वे ईश्वर आत्मा, कर्म सिद्धान्त परलोक आदि को को कल्पनामात्र मानते हैं, क्योंकि वे अप्रत्यक्ष हैं। इस प्रकार चार्वाक जड़वाद का प्रवर्तक है। तत्व-विज्ञान में साधारणतः ईश्वर, आत्मा, जगत विचार आदि की चर्चा होती है। हम यहाँ चार्वाक दर्शन के संबंध में क्रमशः उनकी चर्चा करेंगे।

चार्वाक दर्शन का विश्व संबंधी विचार :⇒

चार्वाक दर्शन विश्व के अस्तित्व को मानता है क्योंकि विश्व का ज्ञान प्रत्यक्ष होता है। भारतीय दर्शन में सामान्यतः विश्व को पंचभूतों से निर्मित माना गया है। वे पाँच भूत हैं - पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश।

Scanned with CamScanner

प्रत्येक भूत का अपना अपना गुण है जिसका ज्ञान इन्द्रिय से होता है। पृथ्वी, जल, वायु अग्नि और आकाश का गुण क्रमशः गंध, स्वाद, स्पर्श, रूप और शब्द है। पृथ्वी का गुण गंध है जिसका ज्ञान नाक से, जल का गुण स्वाद है जिसका ज्ञान जीभ से, वायु का गुण स्पर्श है जिसका ज्ञान त्वचा से होता है। इन पंचभूतो के दो रूप है- स्थूल रूप और सूक्ष्म या अणुरूप। इनके अणुओं के संघात से स्थूल रूप भूतो तथा संपूर्ण विश्व की उत्पत्ति हुई है। चार्वाक दर्शन इन पंचभूतों में चार भूतों की सत्ता को स्वीकार करता है। वह आकाश को नहीं मानता है, क्योंकि आकाश का ज्ञान प्रत्यक्ष से नहीं होता है। आकाश का गुण शब्द है शब्द किसी द्रव्य का गुण नहीं है। अतः आकाश को चार्वाक काल्पनिक मानता है। सांख्य दर्शन मे इस विषय मे इनसे अलग विचार प्राप्त होता है। इसमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पंचभूतों के कारण क्रमशः गन्ध तन्मात्राएँ, रस तन्मात्राएँ, रूपतन्मात्राएं, स्पर्शतन्मात्राएँ, तथा शब्द तन्मात्राएँ है। जो क्रमशः गन्ध, रस, रूप, स्पर्श, तथा शब्द के सूक्ष्म तत्व है। ये तन्मात्राएँ अनुमान से जानी जाती है।

चार्वाक के अनुसार भौतिक पदार्थ चार है। इन्हीं चार भूतो - पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि के भौतिक तत्वों के संयोग से विश्व का निर्माण हुआ है। निर्माण का अर्थ है भूतों का संयुक्त होना तथा प्रलय का अर्थ है भूतों का बिखर जाना है। चार्वाक के अनुसार विश्व का मूल भूत है। प्राण और चेतना का विकास भूत से ही होता है।

चार्वाक का मानना है कि पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि के भौतिक तत्वों का स्वभाव ऐसा है कि इनके विभिन्न अनुपातों में सम्मिश्रण होने पर न केवल निर्जीव वस्तुओं का विकास होता है, बल्कि सजीव वस्तु का भी विकास होता है। यहाँ प्रश्न है कि पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि जैसे निर्जीव पदार्थों के सम्मिश्रण से चेतना का आविर्भाव कैसे होता है। चार्वाक इसके उत्तर में कहते हैं कि - जिस प्रकार से पान, कत्था, चुने और कसैली में लाल रंग का अभाव है, फिर भी उनको एक साथ मिलाकर चबाने से लाल रंग का विकास होता है। उसी प्रकार से पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि के भूत जब आपस में संयुक्त होते हैं तो चेतना का विकास होता है। अतः चार्वाक भौतिक पदार्थ से ही सजीव, निर्जीव, सभी वस्तुओं की उत्पत्ति मानता है।

चार्वाक विश्व को भूतों के आकस्मिक संयोग का फल मानती है। भूतों में विश्व निर्माण की शक्ति मौजूद रहता है। जिस प्रकार आग का स्वभाव गर्म होना है और जल का स्वभाव शीतलता प्रदान करना है उसी प्रकार भूतों का स्वभाव विश्व निर्माण करना है। चार्वाक के इस मत को स्वभाववादी (Naturalistic) मत कहा जाता है। चार्वाक विश्व को प्रयोजनहीन मानता है। यह यंत्र की तरह उद्देश्यहीन है। बिना किसी उद्देश्य के स्वतः विश्व का निर्माण होता है। इसलिए चार्वाक दर्शन को यंत्रवादी दर्शन भी कहा जाता है।

चार्वाक दर्शन का एक अन्य विशेषता यह है कि यह दर्शन वस्तुवाद का समर्थन करता है। वस्तुवाद के अनुसार जगत वास्तविक और सत्य है। जगत जैसा देखा जाता है उसी रूप में उसकी सत्ता होती है। यह मानता है कि वस्तुओं का अस्तित्व ज्ञाता से स्वतंत्र है। विश्व को देखने वाला कोई हो या नहीं हो विश्व का अस्तित्व है। अतः चार्वाक का विश्व संबंधित व्याख्या वस्तुवादी है।

चार्वाक दर्शन के "विश्व संबंधित विचार" के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि यह दर्शन जड़वाद या भौतिकवाद के आधार पर विश्व की व्याख्या करता है। यह पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु के सूक्ष्म कणों के सम्मिश्रण से सजीव और निर्जीव दोनों प्रकार के वस्तुओं के निर्माण की बात करता है। यह संयोग आकस्मिक होता है। यह सिद्धान्त अध्यात्मवादी दृष्टिकोण के प्रतिकूल है जिसमें विश्व के निर्माण के निमित्त कारण के रूप में ईश्वर को स्वीकारा गया है। जबकि चार्वाक दर्शन विश्व के निर्माण के लिए चारों भूतों का आकस्मिक संयोग मानता है।